माता श्री रूपभवानी सहस्त्रनामावली



माता श्री रूपभवानी

(1621–1721 ई.)

रचयिता पं. चमन लाल राज़दान

सहयोगी पं. अर्जुनदेव वैष्ण

।। श्री गणेशाय नमः ।।

ऊँ नमो भवान्यै

विनियोग करें :

ऊँ अस्य माता श्री रूपभवानी सहस्त्र नामावली अलखेश्वरी शक्तिः भगवती भवानी देवता, माता रो'प द्यद तपस्विन्यै आत्मनो वांगमनः कायोपार्जित पाप निवारणार्थ श्री शारिका रूपायै प्रीत्यर्थे होमे/ पुष्पाचर्ने/पाठे विनियोगः।

अब न्यास करें :

अथ करन्यासः

ऊँ अभ्यास प्रियायै अंगुष्ठाभ्यां नमः ऊँ ज्ञान प्रदायै तर्जनीभ्यां नमः ऊँ शुद्धविद्यायै मध्यमाभ्यां नमः ऊँ शक्ति रूपायै अनामिकाभ्यां नमः ऊँ इष्टदेव्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ऊँ विमुक्त्यै करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।

अथ षड्ंगन्यासः

ॐ अभ्यास प्रियायै हृदयाय नमः ॐ ज्ञान प्रदायै शिरसे स्वाहा ॐ शुद्धविद्यायै शिखायै वषट् ॐ शक्ति रूपायै कवचायहुम् ॐ इष्टदेव्यै नेत्राभ्यां वौषट् ॐ विमुक्त्यै अस्त्रायफट्

अब ध्यान करें :

अथ ध्यानम्

आविर्भूता जनकतपसा शारिका अंशरूपा।
ध्वान्तं भित्त्वा सकलजगतो यागतासीत्समक्षम।
भक्तानाञ्च प्रवर– सुखदामागतानां समीपे।
वन्दे नित्यं विकसितमुखीं रूपनाम्नीं भवानीम ।।

श्रीगुरवे नमो नमः

सहस्त्र सर्वत्र व्यापी स्वहृथ् विचार्यम्
बहुबल संबाहु एकतं स्वयंबू परमाकारी।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान–रहस्य् तती परमगती ।।1।।

*(निर्देश : आप प्रत्येक मन्त्र के उच्चारण के अन्त में आहुति डालते हुए **'स्वाहा'** पढ़ें अन्यथा पुष्पार्चन या पाठ के समय प्रत्येक मन्त्र के साथ अन्त में **'नमो नमः'** पढ़ें)*

अग्नहोत्री व घी डालें –

ऊँ रूपभवान्यै विद्महे, द्यदमरविहार देव्यै धीमहि, तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् (3 **बार**)

ऊँ श्री रूपभवानी माता शारिका अंश रूपाये स्वाहा

ऊँ वितस्ता नदिये 0 ऊँ नन्दनये 0 ऊँ बालिकाये 0 ऊँ जलदेवताये 0 ऊँ बलि प्रियाये 0 ऊँ सामिधेन्यै 0 ऊँ पापनाशिन्यै 0 ऊँ धराये 0 ऊँ सश्रद्धाये 0 ऊँ प्रसिद्ध – विख्यात पितृ श्री माधवजू धर आत्मजाये 0 ऊँ लक्ष्याये 0 ऊँ लक्ष्य– प्राप्तये 0 ऊँ करालाये 0 ऊँ

विकरालायै 0 ऊँ भीमायै 0 ऊँ भीरायै 0
ऊँ खनये 0 ऊँ वृतये 0 ऊँ वेलायै 0 ऊँ
नन्दायै 0 ऊँ धात्र्यै 0 ऊँ कविप्रियायै 0 ऊँ
कुरुक्षेत्रावनये 0 ऊँ काश्यै 0 ऊँ
मथुरायै 0 ऊँ काञ्चै 0 ऊँ अवन्तिकायै 0
ऊँ अयोध्यायै 0 ऊँ द्वारकायै 0 ऊँ
तद्रूपररूपायै 0 ऊँ सुभगायै 0
ऊँ नम्रतायै 0 ऊँ वन्द्यै 0 ऊँ रोग–
नाशिन्यै 0 ऊँ गीतये 0 ऊँ सुगीतये 0
ऊँ मायायै 0 ऊँ तीर्थायै 0 ऊँ तीर्थकर
प्रियायै 0 ऊँ प्रतिष्ठित–सुशिक्षित
परिजनायै 0 ऊँ कलायै 0 ऊँ अलक्ष्यायै 0
ऊँ सिंधुवे 0 ऊँ विद्युते 0 ऊँ भ्रान्तायै 0
ऊँ त्रिशक्तये 0 ऊँ कुलपूजितायै 0 ऊँ
त्रिपुष्करायै 0 ऊँ अप्रमेयायै 0 ऊँ
हारीपर्वत परिक्रमायै 0 ऊँ कोशस्थायै 0
ऊँ अव्यक्तायै 0 ऊँ व्यक्तरूपायै 0

ऊँ बलदायै 0 ऊँ हारीयै 0 ऊँ नागवल्लयै 0 ऊँ आशापूरायै 0 ऊँ दीक्षायै 0 ऊँ दक्षायै 0 ऊँ प्रद्युम्नपीठ प्रियायै 0 ऊँ ब्राह्मण कन्यायै 0 ऊँ भक्तवत्सलायै 0 ऊँ गम्भीरायै 0 ऊँ अगाधायै 0 ऊँ चक्रकोण निवासिन्यै 0 ऊँ रोहिण्यै 0 ऊँ भूमिगर्भायै 0 ऊँ भवसागर तारिण्यै 0 ऊँ ग्रहवत्यै 0 ऊँ अभ्यास प्रियायै 0 ऊँ खड्गधारिण्यै 0 ऊँ त्रिशूलधारिण्यै 0 ऊँ डमरूधारिण्यै 0 ऊँ मुदगरधारिण्यै 0 ऊँ कलशधारिण्यै 0 ऊँ शरचाप धारिण्यै 0 ऊँ पाशधारिण्यै 0 ऊँ कपालधारिण्यै 0 ऊँ खट्वांगधारिण्यै 0 ऊँ ज्ञान प्रदायै 0 ऊँ गदाधारिण्यै 0 ऊँ अभयवर प्रदायिन्यै 0 ऊँ हस्तचक्र धारिण्यै 0 ऊँ चण्डघण्टायै 0 ऊँ ब्रह्मण्यै 0 ऊँ वेदमात्रे 0 ऊँ सर्वाधारयै 0 ऊँ

विश्वकर्त्र्यै 0 ॐ चिन्तामणि स्वरूपिण्यै 0 ॐ योगिनी चित्तानन्दायै 0 ॐ शिवाण्यै 0 ॐ निराश्रयायै 0 ॐ भक्तजन वत्सल्यै 0 ॐ हिरण्यै 0 ॐ शरण्यै 0 ॐ तारायै 0 ॐ श्वेत पद्मासन धारिण्यै 0 ॐ वागीश्वर्यै 0

तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि धामासि जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ।

ॐ शशिधारिण्यै स्वाहा ।।100।।

शुद्द युक्त–मूलादारी क्वण्डली मण्डली गौरी । स्यद्द अर्थ सूक्ष्मू सुष्वप्ती चक्र विरक्त शान्तादारी । ईश्वरी तुर्यातीत परमानन्दी । अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान – रहस्य् तती परमगती ।।2।।

ऊँ माता चक्रेश्वर्यै स्वाहा

ऊँ जीर्णायै 0 ऊँ अरजायै 0 ऊँ प्रीतये 0 ऊँ गर्भधारिण्यै 0 ऊँ अरागायै 0 ऊँ प्रतीच्यै 0 ऊँ बलिमायायै 0 ऊँ वेलायै 0 ऊँ परिखायै 0 ऊँ अन्तरात्म–ज्ञानदायै 0 ऊँ कदल्यै 0 ऊँ भैरव्यै 0 ऊँ केकायै 0 ऊँ खट्वायै 0 ऊँ प्राकारवलयायै 0 ऊँ अनेकायै 0 ऊँ सुपथाचारायै 0 ऊँ परिखायै 0 ऊँ पुत्र्यै 0 ऊँ शिवानन्द स्वरूपायै 0 ऊँ मात्रे 0 ऊँ माता महयै 0 ऊँ तृप्तये 0 ऊँ पितृमात्रे 0 ऊँ चैतन्यमात्मायै 0 ऊँ पितामहयै 0 ऊँ स्नुषायै 0 ऊँ शिलारूप्यै 0 ऊँ दौहित्रिण्यै 0 ऊँ जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्त अवस्थायै 0 ऊँ उर्वश्ये 0 ऊँ चण्डायै 0

ॐ वर्तिन्यै 0 ॐ शार्यै 0 ॐ वारुण्यै 0 ॐ अमूर्तायै 0 ॐ गाथायै 0 ॐ पिंगायै 0 ॐ तन्व्यै 0 ॐ शुद्धविद्यायै 0 ॐ शाम्बर्यै 0 ॐ माताकुमारीयै 0 ॐ शुभलक्षणायै 0 ॐ भुवनेश्वर्यै 0 ॐ गारुडीविद्यायै 0 ॐ मूर्तायै 0 ॐ इडायै 0 ॐ पिंगलायै 0 ॐ सेवायै 0 ॐ तुरीयायै 0 ॐ निरीहायै 0 ॐ सुदर्शनायै 0 ॐ सिंदूरवर्णायै 0 ॐ सेव्यायै 0 ॐ देविकायै 0 ॐ बहुश्रुतये 0 ॐ चामुण्डायै 0 ॐ पुरुषाज्ञायै 0 ॐ भिन्नायै 0 ॐ अन्तर्दृष्टि योगाभ्यायै 0 ॐ देशभाषायै 0 ॐ विभ्रमायै 0 ॐ अस्तित्व्यै 0 ॐ बहुभाषाज्ञान्यै 0 ॐ पूर्वजन्म्यै 0 ॐ जपमालां जपन्त्यै 0 ॐ रोगहन्त्र्यै 0 ॐ हवनस्थल्यै 0 ॐ रुद्राक्षमाला धरायै 0 ॐ श्री

अलखसाहिबा भवानी देव्यै 0 ऊँ गुरुमन्त्र उपदेश्यै 0 ऊँ मधुरवाणीयै 0 ऊँ वृद्धरुपायै 0 ऊँ शैवागम् ज्ञान प्रदायक्यै 0 ऊँ पुण्यात्मायै 0 ऊँ शिवशक्ति भक्तायै 0 ऊँ उत्तम् पूर्वपुरुष्यै 0 ऊँ घोरदुःख निवारिन्यै 0 ऊँ रुद्राण्यै 0 ऊँ सप्रूजाति परिवार विवाहितायै 0 ऊँ महाशक्तये 0 ऊँ क्षीर वृद्धियै 0 ऊँ महिषासुर संहर्त्रीयै 0 ऊँ लक्ष्म्यै 0 ऊँ आश्रम् वासिन्यै 0 ऊँ शिष्योत्तमायै 0 ऊँ वनवासिन्यै 0 ऊँ रक्तचन्दन तिलक प्रियायै 0 ऊँ विस्तारयै 0 ऊँ द्यदमर जन्म स्थानायै 0 ऊँ सहिष्णुयै 0 ऊँ कीर्तनीयै 0 ऊँ रूपवतीयै 0 ऊँ मुण्डमालावहन्तीयै 0 ऊँ वेदीयै 0 ऊँ व्याधि नाश्यै 0 ऊँ ज्ञापित्यै 0 ऊँ सुषुप्तियै 0

तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि धामासि जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ।

ऊँ सुषमायै स्वाहा ।।200।।

तद् रूपमयी तत्परमगती स्थानी प्रवाही ।
गति गट् पूरनी च्छ्दा देह तृपितम्।
समर्थ स्वामी परमार्थ निदानम्।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान–रहस्य् तती
परमगती ।।3।।

ऊँ ज्येष्ठशुक्ल पूर्णिमायाँ जयन्त्यै स्वाहा

ऊँ ललाट मनोरमयै 0 ऊँ स्मृतये 0
ऊँ आराध्यै 0 ऊँ वेदोक्तियै 0
ऊँ स्वातन्त्र्यै 0 ऊँ सुश्री माता जननीयै 0
ऊँ स्वस्थ शरीर्यै 0 ऊँ सन्ध्यायै 0

ॐ सुबोध्यै 0 ॐ हीरानन्द सप्रू नाम्ना जायायै 0 ॐ सुवर्ण्यै 0 ॐ सुवेश्यै 0
ॐ स्वधर्म विधर्म सम्मान्यै 0
ॐ सद्गुर्व्यै 0 ॐ सन्धियै 0
ॐ एकाग्रतायै 0 ॐ आनंदीयै 0
ॐ लघुरूपायै 0 ॐ अणुरूपायै 0
ॐ समस्तजाति समादृतायै0 ॐ सप्तम्यै 0
ॐ पूर्णिमायै 0 ॐ वज्रहस्तायै 0
ॐ धर्मशास्त्र ज्ञानदायै 0 ॐ वंशगोत्रै 0
ॐ वंशचरित्रै 0 ॐ वंशवर्धकायै 0
ॐ वंशस्थित्यै 0 ॐ वंशानुक्रमयै 0
ॐ शक्ति रूपायै 0 ॐ चिदानन्दायै 0
ॐ भक्तियुक्त्यै 0 ॐ गायत्रीयै 0
ॐ सावित्रीयै 0 ॐ सरस्वतीयै 0
ॐ जन्मभूमि प्रणाम्यै 0 ॐ सहस्त्र-नयनायै 0 ॐ इन्द्राक्षी भगवत्यै 0

ॐ निर्वैरायै 0 ॐ काश्मीर कुम्कुम प्रियायै 0 ॐ कुम्कुम–तिलक प्रियायै 0 ॐ पुष्टियै 0 ॐ सर्वांगयै 0 ॐ सरोजधारिण्यै 0 ॐ नारायण्यै 0 ॐ एकान्त वासिन्यै 0 ॐ अग्निज्वालायै 0 ॐ रौद्रमुख्यै 0 ॐ जंगमायै 0 ॐ विकसितमुखी भवान्यै 0 ॐ कालरात्र्यै 0 ॐ दुर्गायै 0 ॐ विष्णु–मायायै 0 ॐ रूपारूपायै 0 ॐ जलोदीयै 0 ॐ महालक्ष्म्यै 0 ॐ शुभ्र उष्णीषयै 0 ॐ सहायक्यै 0 ॐ क्षमायै 0 ॐ माघकृष्ण सप्तम्याँ ब्रह्मलीन तिथ्यै 0 ॐ कष्ठमालाधरायै 0 ॐ पुष्करिणीयै 0 ॐ चन्द्रभागायै 0 ॐ पूर्तियै 0 ॐ पुस्तिका धर्तायै 0 ॐ करूणा निधियै 0 ॐ भक्तानुग्रहकारिन्यै 0 ॐ भजन–कीर्तन

प्रियायै 0 ऊँ महाबलायै 0 ऊँ साहिब सप्तमी व्रत धरायै 0 ऊँ सद्गतियै 0 ऊँ सद्गुण्यै 0 ऊँ धर्मज्ञ्यै 0 ऊँ वंशावलीयै 0 ऊँ वंशवर्णनीयै 0 ऊँ वंशवर्धकायै 0 ऊँ तालुस्थायै 0 ऊँ प्रतिष्ठितकुल कन्यायै 0 ऊँ काकिन्यै 0 ऊँ वैष्णव आहारायै 0 ऊँ सूर्यवाहिन्यै 0 ऊँ स्वयम्भुवे 0 ऊँ वर्णाश्रमायै 0 ऊँ स्थावरयै 0 ऊँ सर्वजन जातिस्नेह्यै 0 ऊँ जगद्धात्र्यै 0 ऊँ सुरूपायै 0 ऊँ सत्यवादियै 0 ऊँ सोमयार मन्दिर पूजकायै 0 ऊँ श्री रूपभवानी रहस्योपदेशायै 0 ऊँ सनातनधर्म रीति प्रचारक्यै 0 ऊँ गीतये 0 ऊँ वाराह्यै 0 ऊँ सर्ववर्ण प्रियायै 0 ऊँ प्राकृतायै 0

ऊँ गुरु पालनायै 0 ऊँ वेद–पुराण संगोष्ठी क्रियायै 0 ऊँ सुषुम्णायै 0

तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि धामासि जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः।

ऊँ शत्रु संहारक्यै स्वाहा ।। 300 ।।

उपनिषद् पारिजाता अख्यय् फल् एक्
अर्थी सद्ग्वर योगी अदेहो पुरानम्।
बहु तीजवानी सुशीतल् सुदर्शन
निनायु अग्रायु परम् दीफ् प्रसन्नो ।।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान–रहस्य् तती परमगती ।।4।।

ऊँ पाप–विघ्न विमुक्तिदायै स्वाहा

ऊँ गुरु पादुका पूजित्यै 0 ऊँ परहितायै 0 ऊँ 'फ्यरण' धारणायै 0 ऊँ जनप्रिय हितैषीयै 0 ऊँ निर्विकारायै 0 ऊँ अहं समर्पित्यै 0 ऊँ समागम्यै 0 ऊँ उत्तम् परिजनयै 0 ऊँ वैराग्य स्वभावयै 0 ऊँ सिद्धिदायै 0 ऊँ सभ्यतायै 0 ऊँ पितृसमक्ष्यै 0 ऊँ पराक्रमीयै 0 ऊँ सपुत्रीयै 0 ऊँ उपमा रहित्यै 0 ऊँ मन्त्रक्रियाशीलतायै 0 ऊँ आत्मज्ञायै 0 ऊँ आदिशक्ति पूजक्यै 0 ऊँ गुरुकुल–स्थल्यै 0 ऊँ माधवजू धर प्रियायै 0 ऊँ समाधियै 0 ऊँ समदृष्टि प्रदर्शनयै 0 ऊँ वल्गायै 0 ऊँ सृणये 0 ऊँ सत्यतायै 0 ऊँ सिद्धिरूपायै 0 ऊँ पराक्रमी नारीयै 0 ऊँ सत्कीर्तये 0 ऊँ क्षेमंकर्यै 0

ऊँ शैवशाक्तागमायै 0 ऊँ अलौकिक ज्ञान प्रदायक्यै 0 ऊँ गुप्त–मन्त्र जापिने 0 ऊँ दुरानतये 0 ऊँ देवेश्वरी तपस्यायै 0 ऊँ वीरसुवे 0 ऊँ जयदीक्षायै 0 ऊँ श्रेष्ठायै 0 ऊँ रूपतारायै 0 ऊँ पृथ्व्यै 0 ऊँ पतिमाता दुर्व्यवहार हेतु आश्रमस्थायै 0 ऊँ मधवे 0 ऊँ वसुधाकारायै 0 ऊँ सिद्धविद्यायै 0 ऊँ चम्पायै 0 ऊँ चेतनायै 0 ऊँ प्रभावत्यै 0 ऊँ मृडान्यै 0 ऊँ बन्धरूपायै 0 ऊँ पद्मायै 0 ऊँ आत्मिक साधनारतायै 0 ऊँ मैत्री पूर्णायै 0 ऊँ पार्वत्यै 0 ऊँ सुमुख्यै 0 ऊँ प्रभायै 0 ऊँ प्रज्ञायै 0 ऊँ देवी–आंगन स्थल्यै 0 ऊँ तारायै 0 ऊँ विचार–विमर्श्यै 0 ऊँ बुद्धमात्रे 0 ऊँ चश्मासाहिबी तपोवनायै 0 ऊँ मधुमत्यै 0 ऊँ दान्तायै 0 ऊँ चण्डिकायै 0

ऊँ कान्त्यै 0 ऊँ महानिद्रायै 0 ऊँ कामना शक्त्यै 0 ऊँ समृद्धिशालीयै 0 ऊँ साधकेश्यै 0 ऊँ भीरुण्डायै 0 ऊँ सोमेश्वरघाट स्नानायै 0 ऊँ नीलायै 0 ऊँ महाकाल्यै 0 ऊँ लम्बोदर्यै 0 ऊँ शिवतत्त्व्यै 0 ऊँ कृशोदर्यै 0 ऊँ कालिकायै 0 ऊँ क्षमायै 0 ऊँ ज्योतिषे 0 ऊँ अर्धबिन्दु धरायै 0 ऊँ कंदक्षीर नैवेद्य प्रियायै 0 ऊँ सुगोत्रायै 0 ऊँ विद्यायै 0 ऊँ महा – विद्यायै 0 ऊँ ज्वालामुख्यै 0 ऊँ सिद्धियै 0 ऊँ प्रदीप प्रज्वलनयै 0 ऊँ कान्तायै 0 ऊँ कुलवागीश्वर्यै 0 ऊँ अविद्यायै 0 ऊँ पंचसिद्ध पीठायै 0 ऊँ विरतये 0 ऊँ जिनमात्रे 0 ऊँ प्रबुद्धायै 0 ऊँ सुवस्त्रायै 0

ॐ राज्यलक्ष्म्यै 0 ॐ जिनेन्द्रायै 0
ॐ हंसवाहनायै 0 ॐ वषट्कारायै 0

तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि धामासि जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ।

ॐ महोदर्यै स्वाहा ।। 400 ।।

पवित्र नेत्र पश्यत मुखी अन्तर्
बाहो बहु–दनाडी असंख्य कामू कर्त् ।
यिहुय् राज़–यूगी दाता पिता सुय
सर्वकांख्या सु अर्थ पूरनी। अन्तर्मुखी दृष्टी
निर्वान–रहस्य् तती परम गती ।। 5 ।।

ॐ इष्टदेव्यै स्वाहा

ॐ वर्जित्यै 0 ॐ वेदविद्यायै 0 ॐ रक्त वस्त्रायै 0 ॐ सेवा प्रियायै 0 ॐ

सत्यायै ० ऊँ नारायण्यै ० ऊँ विशारदायै ० ऊँ चतुर्मुख्यै ० ऊँ चतुर्बाहवे ० ऊँ भुक्ति–मुक्ति प्रदात्र्यै ० ऊँ दुर्गमायै ० ऊँ कामेश्वर्यै ० ऊँ शक्तये ० ऊँ कृपावत्यै ० ऊँ दीक्षित–पूजितायै ० ऊँ वासर रूपिणीयै ० ऊँ वर्णमालायै ० ऊँ शैलजायै ० ऊँ पाशरूपिणीयै ० ऊँ सगुण साकार शारिका–रूपायै ० ऊँ भवभुक्ति प्रदायिनीयै ० ऊँ सर्वदायिकायै ० ऊँ घटीयै ० ऊँ नटीयै ० ऊँ धूर्तायै ० ऊँ वर्धकायै ० ऊँ प्रबोधिन्यै ० ऊँ सर्वरूपायै ० ऊँ जनपुण्यायै ० ऊँ शुभफल प्रदायै ० ऊँ वन्दनीयै ० ऊँ कात्यायन्यै ० ऊँ नित्यायै ० ऊँ एकायै ० ऊँ महाभुजायै ० ऊँ करुणाकरीयै ० ऊँ शवस्थायै ० ऊँ शवरूपायै ०

ॐ शवसङ्.गकुतूहलायै ० ॐ त्रिक्मत प्रियायै ० ॐ भूतात्मने ० ॐ परमात्मने ० ॐ वज्रहस्तायै ० ॐ देवकार्यकरीयै ० ॐ धरकुलकन्यायै ० ॐ कुलभूषितायै ० ॐ भुवनेशीयै ० ॐ आनन्दरूपिण्यै ० ॐ कलावत्यै ० ॐ काश्मीर पण्डितजन पूज्यायै ० ॐ लोकहितायै 0 ॐ माता कौमार्यै 0 ॐ जीवन मुक्तायै 0 ॐ रक्तायै ० ॐ दिव्यशक्त्यै ० ॐ भयकर्त्रीयै ० ॐ महाभय प्रदायिनीयै ० ॐ भयनाशिनीयै ० ॐ भय वर्द्धिनीयै ० ॐ अभ्यास – तप प्रियायै ० ॐ यम श्रेष्ठायै ० ॐ यम प्रियायै ० ॐ जयवर्द्धन–कारिणीयै ० ॐ भद्ररूपिणीयै ० ॐ सोमदर्शनायै ० ॐ जनवल्लभायै 0 ॐ दाक्षायणीयै ० ॐ पर्वत प्रीतायै ० ॐ ग्रामवासिन्यै ० ॐ नाद बिन्दु

ज्ञानदायै ० ॐ पुण्यजन प्रियायै ०
ॐ पुण्यदात्रीयै ० ॐ पुण्यकान्तायै ०
ॐ पुण्यसंस्थायै ० ॐ कैलासवासिन्यै ०
ॐ पुण्यापुण्य स्वरूपायै ० ॐ चारू-
रूपायै ० ॐ रंजिनीयै ० ॐ रञ्जितायै ०
ॐ मधुरायै ० ॐ कालीयै ० ॐ
तुलसीयै ० ॐ तुलनायै ० ॐ तुल्यायै ०
ॐ रुक्मिणीयै ० ॐ सतीसर शब्दायै ०
ॐ शिवकारिणीयै ० ॐ स्त्रीमूर्त्यै ० ॐ
राकिनीयै ० ॐ निर्गुण निराकारायै ०
ॐ धरणीयै ० ॐ धारिणीयै ० ॐ
नानारूप प्रदायै ० ॐ नानावेशधरायै ०
ॐ वेशधारिण्यै ० ॐ धनप्रदायै ० ॐ
धनरूपायै ० ॐ ज्योतिरूपिण्यै ०

तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि धामासि जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ।

ॐ जयस्वरूपायै स्वाहा ।। 500 ।।

निर्लज्जा रमनू परिरूफ् निदारा
सृष्ट थ्यथ् संहारी प्रलय च्यथ्।
अदृष्टो अग्रन्थो निज़ानो प्रसन्नो
आदिदीव तथ् निहानो निष्कल थ्यररूफ।।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती
परमगती ।।6।।

ॐ धरजाति कन्यायै स्वाहा

ॐ कुलवासिन्यै ० ॐ माधविकायै ०
ॐ शान्तिः प्रियायै ० ॐ वनदेव्यै ०

ॐ माधवरूपिकायै ० ॐ स्थावरायै ०
ॐ जंगमायै ० ॐ प्रणामी स्वीकृत्यै ०
ॐ विख्यात साध्व्यै ० ॐ विज्यै ०
ॐ वायव्यै ० ॐ आस्थायै ० ॐ
नृत्य प्रियायै ० ॐ कुसुमायै ०
ॐ शक्ति दायिन्यै ० ॐ बलदायिन्यै ०
ॐ सामर्थ्य दायिन्यै ० ॐ सर्वानन्द
प्रदात्र्यै ० ॐ शंखनादयै ०
ॐ पूज्यनीयै ० ॐ निपुणयै ० ॐ
धर्म श्रद्धायै ० ॐ निष्कलंक्यै ०
ॐ सुशीलायै ० ॐ दीर्घजीव्यै ० ॐ
एककन्यायै ० ॐ ज्ञानकर्म योगीश्वर्यै ०
ॐ विश्वास्यै ० ॐ हुंकारिन्यै ० ॐ
कालायिन्यै ० ॐ निस्स्वार्थ्यै ० ॐ
श्रद्धायै ० ॐ आह्वान भक्त्यै ० ॐ
पूर्णतायै ० ॐ मण्डली प्रियायै ० ॐ
गुरु शिष्य मूर्तये ० ॐ वर्जनीयै ० ॐ

निष्काम्यै ० ॐ दयानिधियै ० ॐ
दृढ़तायै ० ॐ ऐश्वर्यै ० ॐ हिमगिरि–
तन्यै ० ॐ कुमार मात्रे ० ॐ
मनिगाम स्वाश्रमायै ० ॐ वरदायिन्यै ०
ॐ त्रिकालज्ञै ० ॐ तपोनिष्ठायै ० ॐ
आधार शक्तियै ० ॐ निधियै ० ॐ
दानवीरयै ० ॐ प्राकृत्यै ० ॐ सिंधुनदी–
तीरे चिनार वृक्षायै ० ॐ प्रार्थनीयै ० ॐ
त्रिवेदयै ० ॐ प्रस्फुट ललाट्यै ० ॐ
क्षीराहार प्रियायै ० ॐ धर्मोपदेशक्यै ०
ॐ प्राणप्रतिष्ठित मूर्त्यै ० ॐ सर्वत्र
पूजितै ० ॐ प्रीतिकारक्यै ० ॐ मुगल
नृप प्रशंसकायै ० ॐ वैद्यमात्रे ० ॐ
शाकाहारीयै ० ॐ शिवायै ० ॐ
शर्वाण्यै ० ॐ शैव्यै ० ॐ तत्वज्ञानीयै ०
ॐ राजस्यै ० ॐ प्राणापान ज्ञान
प्रदायै ० ॐ विजित्यै ० ॐ विज्ञ्यै ० ॐ

विमलयै ० ऊँ विवाहिते 0 ऊँ शास्त्र विशेषज्ञै ० ऊँ विश्व प्रसिद्धयै ० ऊँ तामस्यै ० ऊँ स्वरूपायै ० ऊँ गुरु देवी प्रसादायै ० ऊँ स्वयंभूचक्र चिह्नायै ० ऊँ ऐकाररूपिण्यै ० ऊँ रक्त दन्तायै ० ऊँ जलस्थायै ० ऊँ शक्ति पूज्यै ० ऊँ शक्ति पूजकै ० ऊँ शक्ति पूजकायै ० ऊँ महाभैरव पूजितायै ० ऊँ आध्यात्मिक साधना तत्परायै ० ऊँ सारिकायै ० ऊँ शत वर्षीयै ० ऊँ सुभिक्षायै ० ऊँ शोक–नाशिन्यै ० ऊँ कूटस्थायै ० ऊँ महाकोश्यै ० ऊँ महावर्तायै ० ऊँ रजोवृतायै ० ऊँ मधुमिष्टान्न भोजनायै ० ऊँ एकादश्यै ० ऊँ चतुर्दश्यै ०

तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि धामासि जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ।

ऊँ अमायै स्वाहा ।। 600 ।।

लुत्र वित्र न आसा न गुत्री न बाशी
न कुली न कृत्यं महानन्दरूपम् ।
शयुम्–थान वासी आदि सर्वमध्यं
जिता संन्यासी ब्यन–बिन्दु–नादी ।।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान–रहस्य् तती परम
गती ।। 7 ।।

ॐ शाकिन्यै स्वाहा
ॐ भक्तियुक्तै स्वाहा

ॐ रजनीयै ० ॐ विजयै ० ॐ विनयै ० ॐ अंतिमआश्रम वासकुरग्राम सिद्धपीठायै ० ॐ कोटराश्रयायै ० ॐ मुण्डमाला वहन्तीयै ० ॐ सत्य–वादिन्यै ० ॐ सत्यायै ० ॐ सत्यवतीयै ० ॐ सर्वेश्वरीयै ० ॐ सर्वात्मनायै ० ॐ महादेवप्रियायै ० ॐ दृष्टिहीन बालक नेत्र

प्रकाशदात्र्यै ०ऊँ गुरुरूप धरायै ०
ऊँ मन्दिर परिक्रमै ० ऊँ पुष्टतायै ०
ऊँ पूर्णायै ० ऊँ मुण्डहस्तायै ०
ऊँ दिवे ० ऊँ श्रिये ० ऊँ सुतन्तवे ०
ऊँ बीजसन्ततये ० ऊँ जगज्जीवायै ०
ऊँ जगद्बीजायै ० ऊँ चित्रिण्यै ०
ऊँ यक्षिण्यै ० ऊँ निर्मुण्डायै ० ऊँ
पद्मासनायै ० ऊँ हस्तिन्यै ० ऊँ
महारुण्डायै ० ऊँ नवम्यै ० ऊँ रौद्रयै ०
ऊँ त्रिकोणायै ० ऊँ षट्कोणायै ० ऊँ
अष्टकोणायै ० ऊँ अष्टादशभुजायै ०
ऊँ रतये ० ऊँ हिंसायै ० ऊँ
हंसगतये ० ऊँ काश्मीर पण्डितान्यै ०
ऊँ मष्यै ० ऊँ केसरीध्वजायै ० ऊँ
लेखिन्यै ० ऊँ लेख्व्यायै ० ऊँ शंख
हस्तायै ० ऊँ क्षान्तये ० ऊँ पटासायै ०
ऊँ प्रौढ़रूपायै ० ऊँ कौशिक्यै ० ऊँ

कुशावर्तायै ० ॐ कौशाम्ब्यै ० ॐ

कोशवर्द्धिन्यै ० ॐ धर्मतायै ०

ॐ मन्त्रशक्त्यै ० ॐ तोतलायै ०

ॐ विशोकायै ० ॐ तरुणीयै ० ॐ

पूर्णिमा जन्म तिथ्यै ० ॐ तपोबल्यै ०

ॐ तपोशक्त्यै ० ॐ तमोयुक्तायै ०

ॐ सात्त्विक्यै ० ॐ अष्टम्यै 0 ॐ

होराष्टम्यै 0 ॐ कलशहस्तायै 0 ॐ

कोशदायै ० ॐ सौम्यायै ० ॐ

तादृश्यै ० ॐ सामर्थ्यै ० ॐ साध्व्यै ०

ॐ महाघण्टायै ० ॐ घण्टाध्वन्यै ० ॐ

प्रणालियै ० ॐ तीक्ष्णयै ० ॐ

मृगलोचनायै ० ॐ लज्जायै ० ॐ

रसवत्यै ० ॐ भवान्यै ० ॐ

पूतनायै ० ॐ शून्यायै ० ॐ प्रेतायै ०

ॐ लोकेश्यै ० ॐ सुरोत्तमायै ० ॐ

सविषायै ० ॐ ज्वालायै ० ॐ

अक्षयायै ० ॐ शिवप्रियायै ०
ॐ अकामायै ० ॐ स्वस्थायै ०
ॐ बालक्रीडायै ० ॐ बालायै 0
ॐ सुपर्वायै 0 ॐ पाञ्चाल्यै 0 ॐ
गर्भाधारधरायै ० ॐ स्वस्थानवासिन्यै ०
ॐ विषारये ० ॐ शिष्यायै ०

तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि धामासि जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ।

ॐ हाकिन्यै स्वाहा ।। 700 ।।

न जाया न जन्मी दग्दकर्मकाण्डी
यथा शान्तबस्मी अरूपा स्वरूपम्।
सूह्र सर्व्रत्र–सुखी अदेहो समादि
अमोहसावदानं तथ् निष्कल निराकार ।।

अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान–रहस्य् तती परम गती ।। 8।।

ऊँ माता भवान्यै स्वाहा

ऊँ रात्र्ये ० ऊँ दीर्घनिद्रायै ० ऊँ महामार्यै ० ऊँ विनिद्रायै ० ऊँ तन्द्रायै ० ऊँ गुर्व्यै ० ऊँ मृत्यवे ० ऊँ मार्यै ० ऊँ शैलवासिन्यै ० ऊँ वामाचार प्रियायै 0 ऊँ तुष्टायै 0 ऊँ लोपामुद्रायै 0 ऊँ दक्षिणामूर्तये ० ऊँ अनेक वस्त्र वर्णायै ० ऊँ योगयुक्तायै ० ऊँ योगांग्यै ० ऊँ ध्यान शालिन्यै ० ऊँ याग प्रियायै ० ऊँ योग प्रियायै ० ऊँ बहिः स्थायै ० ऊँ कवित्वदायै ० ऊँ शान्तायै ० ऊँ साक्षिण्यै ० ऊँ दक्षजायै ० ऊँ कोटिरूपिण्यै ० ऊँ

क्रतवे ० ॐ कात्यायन्यै ० ॐ
स्वच्छायै ० ॐ अन्नपूर्णायै ० ॐ
स्वधामायै ० ॐ सौभाग्य दायिन्यै ०
ॐ भगवत्यै ० ॐ ऐन्द्रयै ० ॐ
कायस्थायै ० ॐ तपस्विन्यै ० ॐ
महेज्यायै ० ॐ मोक्षदायिन्यै ० ॐ
परिज्ञान्यै ० ॐ गुरु-पितृ ध्यायन्त्यै ०
ॐ तप प्रियायै ० ॐ वैद्यायै ० ॐ
शिवदूत्यै ० ॐ वधरूपायै ० ॐ
सुकुलायै ० ॐ शतबाहवे ० ॐ कुल
विद्यायै ० ॐ वरदायै ० ॐ जयन्त्यै ०
ॐ जगद्म्बायै ० ॐ अकारायै ० ॐ
इकारायै ० ॐ उकारायै ० ॐ
सिद्धिकर्त्रीयै ० ॐ चतुर्वर्णै ० ॐ
वेदमार्गरतायै ० ॐ त्रिसन्ध्यायै ० ॐ
सिंहवाहन वाहिन्यै ० ॐ अम्बायै ०
ॐ मुक्तायै ० ॐ मेनापुत्र्यै ० ॐ

जिनेश्वर्यै ० ॐ वरधारिण्यै ० ॐ
वरायुधधरायै ० ॐ योगगम्यायै ० ॐ
सुपर्वायै ० ॐ अप्रतिम् स्वरूपायै ०
ॐ कुमार्यै ० ॐ शाकम्भर्यै ० ॐ
दुर्लभायै ० ॐ वसुधारायै ० ॐ
कामाख्यायै ० ॐ जप प्रियायै ० ॐ
कामवन्दितायै ० ॐ पताकायै ० ॐ
विजयायै ० ॐ सुबाणायै ० ॐ
वेदशक्तये ० ॐ चापिन्यै ० ॐ
क्षेमड्.कर्यै ० ॐ पाशहस्तायै ० ॐ
अम्बिकायै ० ॐ अन्नपुष्टये ० ॐ
तुष्टिदायै ० ॐ सतीमात्रे ० ॐ
चन्द्रमुख्यै ० ॐ मनीषायै ० ॐ
महामायायै ० ॐ वासकुर ग्राम
स्थानायै ० ॐ हरिहर प्रणतायै ० ॐ
जालन्धर धरायै ० ॐ तापस्यै ० ॐ
वात्याल्यै ० ॐ योगध्येयायै ० ॐ

मेघमालायै ० ऊँ शृंखलायै ० ऊँ पराथ्यै ० ऊँ देहपुष्टये ० ऊँ सुधामायै ०

तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि धामासि जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ।

ऊँ मनः तुष्टये स्वाहा ।। 800 ।।

अहंत्व–ममता गलिथ् थ्यथ् प्रलय ना आसे। यिथु न आसि–मीलिथ् कवलदल् जलबिन्दु।
मध्य् आकाशी कदाचित् ब्रछ् ना आसे।
लगि न–त क्या वाचि़ फला रस ग्वनी।
शिला ज़ल सग् अग्न दाह बस्मो
साद् ताय् पसमु सर्व–अन्त्र सृष्टी।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान–रहस्य् तती
परम गती ।। 9 ।।

ॐ खलहायै स्वाहा

ॐ शरणागत वत्सलायै ० ॐ कौलिक्यै
० ॐ भ्रमनाशिन्यै ० ॐ वागुरायै ०
ॐ जीवायै ० ॐ ग्राहिण्यै ० ॐ
वसुमत्यै ० ॐ रक्तवस्त्र धरायै ० ॐ
कुण्डलिन्यै ० ॐ मूलाधारायै ० ॐ
बुद्धिदायै ० ॐ पद्धति विचार्यै ० ॐ
नित्यायै ० ॐ दीर्घायै ० ॐ विदुष्यै ०
ॐ कम्बुग्रीवायै ० ॐ सिद्धिदायै ० ॐ
जगद्गर्भायै ० ॐ निराश्रयायै ० ॐ
काल्यै ० ॐ शिवादूत्यै ० ॐ विमुक्त्यै ०
ॐ निराकारायै ० ॐ निराधारायै ० ॐ
सत्य प्रियायै ० ॐ योगकर्त्र्यै ० ॐ
यागकर्त्र्यै ० ॐ रोगहर्त्र्यै ० ॐ
प्रतिभायै ० ॐ सुस्तन्यै ० ॐ
अन्तर्वल्यै ० ॐ सत्यायै ० ॐ

पद्मप्रियायै ० ऊँ दीप्तायै ० ऊँ
मधुश्रियै ० ऊँ वसुप्रियायै ० ऊँ काश्मीर
शाक्तदर्शनायै ० ऊँ मधुमत्तायै ० ऊँ
सुवेणयै ० ऊँ भक्तानाम् सिद्धिधात्र्यै ०
ऊँ महाश्वेतायै ० ऊँ रक्ताम्बर धरायै ०
ऊँ क्षीवायै ० ऊँ कवियित्र्यै ० ऊँ
पुष्पबाणायै ० ऊँ परिघायुधायै ० ऊँ
मयूरवाहनायै ० ऊँ वसुधायै ० ऊँ
परिपूर्णायै ० ऊँ पद्मिन्यै ० ऊँ माध्व्यै ०
ऊँ हरितग्राम् वासिन्यै ० ऊँ गोमुखीयै ०
ऊँ काश्मीरी भाषायै ० ऊँ किष्णगंगायै ०
ऊँ परमेश्वर्यै ० ऊँ षट्चक्र वासिन्यै ०
ऊँ वीरायै ० ऊँ रक्तपुष्प हस्तायै ०
ऊँ दुःखाप हारायै ० ऊँ गंगायै ० ऊँ
माहेश्वर्यै ० ऊँ सुशीलायै ० ऊँ
वेदमात्रे ० ऊँ अष्टकोण्यै ० ऊँ
प्रसिद्धायै ० ऊँ सुमनप्रियायै ० ऊँ

इच्छाये ० ॐ ज्ञानायै ० ॐ क्रियाये ०
ॐ ब्राह्मण्यै ० ॐ नृपवश्यकर्यै ० ॐ
सनातन्यै ० ॐ षट्कोण निवासिन्यै ०
ॐ सुलेखाये ० ॐ निर्मोक्ष्यै ०
ॐ धीरायै ० ॐ महामात्रे ० ॐ
स्वर्गतये ० ॐ चण्डयै ० ॐपद्महस्तायै ०
ॐ नानारूपधरीयै ० ॐ मंगलाये ० ॐ
सिन्दूरतिलक प्रियायै ० ॐ तेजस्विन्यै ०
ॐ सत्याये ० ॐ ललितायै ० ॐ
तीर्थनगरे तीर्थ स्थानायै ० ॐ जयायै ०
ॐ सुपूजितायै ० ॐ शाम्भव्यै ० ॐ
वज्रासन अभ्यासये ० ॐ नर्मदाये ०
ॐ हंस्यै ० ॐ आत्म् ज्ञानायै ० ॐ
श्रीवेद मुख्यै ० ॐ फलमुख्यै ० ॐ
निद्रामुख्यै ०

तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि धामासि जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ।

ॐ जयकरीयै स्वाहा ।। 900 ।।

वेदवाख्–अर्था अमृतनदी संप्रीता
अनेक प्रवाही समनय् षोडशचन्द्र कल्।
स पण्डिता समदर्शगनी अर्चनीदीव्
सु–निर्मल तोत्री सथ् तव् पाठि्।
सर्वत्र जगद्–गुरू सेवा अनन्तपूजनी एक
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वाण–रहस्य् तती परम
गती ।। 10।।

ॐ विद्याधरीयै स्वाहा

ॐ गौरीयै ० ॐ संत लालचन्द दुग्ध–प्रदातृ–गोमात्रे ० ॐ शत्रुनाशिन्यै ० ॐ अष्टसिद्धि प्रदायै ० ॐ दक्षिणायै ०

ॐ शुचये ० ॐ विश्व रूपायै ० ॐ मदिरायै ० ॐ मन्त्र दीक्षायै ० ॐ पुष्टिदायै ० ॐ कामेश्वर्यै ० ॐ भयहारिणीयै ० ॐ वीरभुवे ० ॐ वीरमात्रे ० ॐ प्रभुतायै ० ॐ जयदायै ० ॐ खड्गधारायै ० ॐ ओंकारायै ० ॐ जयश्रियै ० ॐ यज्ञायै ० ॐ गुरु-उपदेशायै ० ॐ वामायै ० ॐ भव्यायै ० ॐ भूतायै ० ॐ कामरूपिण्यै ० ॐ प्रौढ़ायै ० ॐ शत्रुघातिन्यै ० ॐ आर्यायै ० ॐ परमात्मने ० ॐ अम्बालिकायै ० ॐ पथिदेवतायै ० ॐ योगिन्यै ० ॐ सुदक्षिणायै ० ॐ समदर्शन्यै ० ॐ गायत्र्यै ० ॐ सावित्र्यै ० ॐ परामश्र्यै ० ॐ रक्तवर्णायै ० ॐ रक्तनेत्र्यै ० ॐ जननीयै ० ॐ निर्वाण दशश्लोकीयै ० ॐ अपर्णायै ० ॐ क्रूरायै ०

ऊँ ज्ञानरूपिण्यै ० ऊँ द्रव्यशक्त्यै ०
ऊँ उत्तमायै ० ऊँ शारदायै ० ऊँ दुग्धान्न
आहारायै ० ऊँ वीरनन्दिन्यै ० ऊँ काश्मीर
जन्म स्थल्यै ० ऊँ भूषायै ० ऊँ गौर्यै ०
ऊँ भक्षयन्त्यै ० ऊँ परोपकारायै ० ऊँ
सर्वलोकमहेश्वर्यै ० ऊँ निष्ठायै ० ऊँ
आद्यायै ० ऊँ कामधेन्वे ० ऊँ
पितृ–गुरु–रूपायै ० ऊँ पद्मावत्यै ०
ऊँ त्रिशक्तियै ० ऊँ श्यामायै ० ऊँ
शशिकलायै ० ऊँ प्रत्यक्षायै ० ऊँ
अनन्तायै ० ऊँ सावित्रीयै ० ऊँ
वृद्धमातायै ० ऊँ सुरसुन्दरीयै ० ऊँ
सर्वशास्त्रमयीयै ० ऊँ वैरीविनाशिन्यै ०
ऊँ धन्यायै ० ऊँ सर्वमंगलायै ० ऊँ
हरितग्राम वासिन्यै ० ऊँ समेधायै ०
ऊँ शीतलायै ० ऊँ सत्यमेधायै ०
ऊँ त्रिपुरभैरव्यै ० ऊँ कपाल–भूषणायै ०

ॐ काश्मीर शाक्त विमर्शन्यै ० ॐ विमलायै ० ॐ काश्मीर्यै ० ॐ महोदरीयै ० ॐ भद्रकालीयै ० ॐ क्रियावत्यै ० ॐ सूक्ष्मायै ० ॐ वधोद्धतायै ० ॐ वृषप्रियायै ० ॐ वृषारूढ़ायै ० ॐ क्रिया शक्त्यै ० ॐ महिषासुर घातिन्यै ० ॐ सुम्भ-दर्पहरायै ० ॐ कपाल कुण्डलायै ० ॐ तपः सिद्धये ० ॐ युवतीयै ० ॐ हरिप्रियायै ० ॐ सुपथ्यायै ० ॐ देविकायै ० ॐ मृगयायै ०

तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि धामासि जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ।

ॐ रूपभवानी शारदापीठायै स्वाहा ।।1000।।

फूल डालें –

1. बीजैः सप्तभिरुज्ज्व्लाकृतिरसौ या सप्तसप्तिद्युतिः सप्तर्षिप्रणतांग्घिपंकजयुगा या सप्तलोकार्तिहृत्। काश्मीरप्रवरेश मध्यनगरी प्रद्युम्नपीठे स्थिता देवी सप्तकसंयुता भगवती श्री शारिका पातु नः।।
2. अन्य श्लोक, रहस्योपदेश तथा माता के वाख् का उच्चारण करें।

तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि धामासि जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ।

– स्वाहा –

<u>तर्पण करते हुए पढ़ें –</u>

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला मालिनी
मातंगी विजया जया भगवती देवी शिवा शम्भवी।
शक्तिः शंकर वल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी।
ह्रींकारी त्रिपुरा परापरमयी माता कुमारी त्यसि ।।

अनेन मन्त्र होमेन/पाठेन/पुष्पार्चनेन आत्मनो वांग्मनः कायोपार्जित पापनिवारणार्थं श्री माताप्रसाद सिद्धयर्थं सहस्त्रनाम्नी देवी श्री रूपभवानी प्रीयतां प्रीतास्तु ।।

******

माता श्री रूप भवानी अलखेश्वरी की जीवन परिचय

शारिका–स्वरूप माता रूप भवानी (ज्येष्ठ शुक्लपक्ष पूर्णिमा) 1621 दयदँमर (सफाकदल) श्रीनगर के पंडित माधवजू धर के घर पुत्री रूप में अवतरित हुई । घर सुशिक्षित तथा प्रतिष्ठित होने के कारण रूप भवानी के संस्कार बहुत ही शुद्ध तथा पवित्र थे। बचपन से ही आपके विचार निर्मल थे परन्तु सांसारिक विषयों के प्रति उदासीन रहती थीं। आपके पिता ने आपको आध्यात्मिक दीक्षा दी और वे ही आपके पहले गुरू बने।

माना जाता है कि स्वयं माता शारिका ने रूपा का रूप धारण किया था। आप प्रतिदिन प्रातः काल में माता शारिका के दर्शन हेतु हारी परवत जाती थीं। बचपन में हीं माता रूप भवानी को पिता के सान्निध्य से अध्यात्मिक वातावरण मिला।

माता रूप भवानी ने पहले चश्मा साहिबी में कुछ वर्ष तपस्या की और उसके बाद बोतशन पहुँची और वहां से मनिगाम में पहले लालचंद के घर रहीं और फिर अलग एक कुटिया में रहने लगीं। यहीं पर माता रूप भवानी ने एक अधजली चिनार की शाख को बहते देखा जिसको उठाकर माता ने उल्टा करके जमीन में बोया

जो आगे चलकर एक विशाल चिनार का वृक्ष बन गया। यहां माता अपनी तपस्या में मग्न रहतीं थीं और बिना दूध लिए वह कुछ भी नहीं खातीं थीं।

लालचंद जो गांव का नम्बरदार था, ने एक दिन यह जान लिया कि उनकी एक गैया रोज़ माता के पास जाकर उनको दूध देती रही हैं। तब जाकर लालचंद ने वहां माता के लिए एक कुटिया बनवाई। फिर माता मनिगाम से लार चली आई और लार से वासकुर गयीं जहां उन्होंने एक आश्रम बनवाया। पानी निकट न होने के कारण एक अन्धे मुसलमान लड़के से कुआँ खुदवाया जिससे उसकी आँखों की दृष्टि लौट आई।

भक्तजन उन्हें रोफ रो'प भवानी, साहिबी सरकार और अलखेश्वरी के नाम से स्मरण करते हैं। रूपभवानी को संस्कृत, फारसी, उर्दू, हिन्दी का ज्ञान था। वेदांत, उपनिषद्, योग साधना तथा शैव-दर्शन का उनकी अमृतवाणी पर प्रभाव पड़ा है। उनकी यही अमृतवाणी ''वाखों'' और लोकों में उपलब्ध है। माता के चमत्कारों को देखकर उनकी प्रसिद्धि सारे कश्मीर में फैल गयी।

आप 100 साल की आयु में सन् 1721 (माघ कृष्णपक्ष सप्तमी) के दिन ब्रह्मलीन हुई।

******

Published by :
पं. राजनाथ धर (Patron)
माता श्री रूप भवानी ग्लोबल रिसर्च फाउण्डेशन (MRGRF)
सी–83, सैक्टर–33, नौएडा–201307 (उ.प्र.)
संपर्क नं0 : +91–9810977014, 9810577014
Email : mrbgrf@gmail.com